इकाई 20 व्यक्ति–चित्र

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 व्यक्ति–चित्र से अभिप्राय

20.3 व्यक्ति–चित्र का उद्देश्य और महत्त्व

20.4 व्यक्ति के चयन का आधार

20.5 लेखन की तैयारी

- 20.5.1 आवश्यक अध्ययन
- 20.5.2 साक्षात्कार
- 20.5.3 सामग्री का चयन

20.6 व्यक्ति–चित्र के विभिन्न पक्ष

- 20.6.1 जीवन परिचय
- 20.6.2 कार्यक्षेत्र
- 20.6.3 उपलब्धि और योगदान
- 20.6.4 प्रासंगिकता और महत्त्व

20.7 व्यक्ति–चित्र का लेखन

- 20.7.1 व्यक्ति–चित्र का आकार
- 20.7.2 व्यक्ति–चित्र की शैली
- 20.7.3 व्यक्ति–चित्र की भाषा
- 20.7.4 व्यक्ति–चित्र का शीर्षक

20.8 किसी संस्था के प्रोफाइल का लेखन

20.9 सारांश

20.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

20.11 उपयोगी पुस्तकें

20.0 उद्देश्य

समाचार पत्र और फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम की यह बीसवीं इकाई है। इस इकाई में व्यक्ति–चित्र के लेखन के संबंध में बताया गया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- व्यक्ति–चित्र के अभिप्राय और महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे;
- व्यक्ति–चित्र लेखन के लिए उपयुक्त व्यक्ति या संस्था का चयन कर सकेंगी/सकेंगे;
- लेखन के लिए आवश्यक तैयारी कर सकेंगी/सकेंगे;

- व्यक्ति–चित्र के लेखन से संबंधित विभिन्न पक्षों को बता सकेंगी/सकेंगे; और
- व्यक्ति–चित्र का लेखन कर सकेंगी/सकेंगे।

20.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम आपको व्यक्ति–चित्र के लेखन के बारे में बतायेंगे। व्यक्ति–चित्र, जिसे अंग्रेजी में 'प्रोफाइल' कहते हैं, फीचर लेखन का महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रोफाइल का संबंध केवल व्यक्तियों से ही नहीं होता, संस्थाओं से भी होता है। परंतु हमने यहाँ अधिकतर ऐसे प्रोफाइल की चर्चा की है जिनमें किसी व्यक्ति को ही केन्द्र में रखा जाता है। इसलिए प्रोफाइल को व्यक्ति–चित्र का नाम दिया है।

आपने अनुभव किया होगा कि संचार माध्यमों के द्वारा जो घटनाएँ हमारे सम्मुख उपस्थित होती हैं, उनसे कुछ लोग जुड़े होते हैं। जैसे पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ में कुछ समय पहले हुए परिवर्तन। इनसे सोवियत राष्ट्रपति गोर्बाचेव का नाम अनिवार्य रूप से जुड़ा है। नर्मदा परियोजना से संबंधित आंदोलन से बाबा आमटे और मेधा पाटकर का नाम जुड़ा है। इस तरह जब हम मीडिया के माध्यम से घटनाओं से जुड़ते हैं तो उनके साथ ही उनसे संबंधित लोगों के बारे में भी हमें जानने की उत्सुकता बढ़ती है। व्यक्ति–चित्र इसी उत्सुकता का समाधान करता है। राजनेता, वैज्ञानिक, खिलाड़ी, शिक्षाविद्, लेखक, कलाकार अपने कार्यों से चर्चित होते हैं। व्यक्ति–चित्रों के माध्यम से हमें उनके बारे में और अधिक जानने का अवसर प्राप्त होता है। इन 'व्यक्ति–चित्रों' के ही लेखन के बारे में इस इकाई में बताया गया है।

''व्यक्ति–चित्र'' केवल व्यक्ति का सामान्य परिचय नहीं हैं हालांकि उसमें व्यक्ति के जीवन के संबंध में जानकारी भी दी जाती है। खास बात यह है कि व्यक्ति–चित्र के माध्यम से व्यक्ति विशेष का एक ऐसा चित्र प्रस्तुत किया जाता है जिससे कि पाठक उसके व्यक्तित्व के नये रूप से साक्षात्कार हो सके।

इस इकाई में हमने व्यक्ति–चित्र लेखन के लिए की जाने वाली तैयारियों, व्यक्ति–चित्र के विभिन्न पक्षों और व्यक्ति–चित्र के लेखन के संबंध में व्यवहारिक जानकारी दी है। हमने विभिन्न उदाहरणों से अपनी बात समझाने का प्रयास किया है। इनके साथ ही जो अभ्यास दिए हैं उनको करने से आप व्यक्ति–चित्र के लेखन की कुशलता का विकास कर सकेंगे।

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित व्यक्ति–चित्रों को ध्यान से पढ़िए। उनकी विशेषताओं और कमजोरियों को पहचानिए। इसके बाद आप किसी चर्चित व्यक्ति का व्यक्ति–चित्र स्वयं लिखने की कोशिश कीजिए। इसके लिए आप पुस्तकों, समाचार पत्रों आदि का अध्ययन करें। इस तरह के अभ्यास से आपको व्यक्ति–चित्र लिखने में काफी मदद मिलेगी।

20.2 व्यक्ति–चित्र से अभिप्राय

पत्रकारिता के क्षेत्र में 'व्यक्ति–चित्र' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति–चित्र जिसे अंग्रेजी में 'प्रोफाइल' कहते हैं, फीचर लेखन का एक अंग है। 'प्रोफाइल' का शाब्दिक अर्थ है– पार्श्वचित्र (Side veiw), रेखाचित्र (Sketch) आदि। यह पार्श्वचित्र या रेखाचित्र किसी व्यक्ति का भी हो सकता है और किसी वस्तु का भी। फीचर लेखन के

क्षेत्र में 'प्रोफाइल' एक ऐसे आलेख को कहेंगे जिसमें किसी व्यक्ति विशेष का संक्षिप्त परिचय दिया गया हो या किसी वस्तु–विशेष का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया हो। यहाँ वस्तु का अर्थ व्यापक है। वह कोई संस्था कोई गतिविधि भी हो सकती है। उदाहरण के लिए, महान क्रिकेट खिलाड़ी सुनील गवासकर या भारत में मछली उद्योग पर 'प्रोफाइल' तैयार किया जा सकता है। यहाँ हमने 'प्रोफाइल' को व्यक्ति–चित्र इसलिए कहा है कि हम मुख्य रुप से इस इकाई में व्यक्ति विशेष का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत करने वाले 'प्रोफाइल' की ही चर्चा करेंगे। लेकिन विद्यार्थियों को इस इकाई में यह भी बताया जाएगा कि संस्थाओं की प्रोफाइल कैसे तैयार की जाती है। 'प्रोफाइल' केवल 'मुद्रित मीडिया' का ही अंग नहीं है। रेडियो और टी. वी. के लिए भी ''प्रोफाइल'' तैयार किए जा सकते हैं। लेकिन इस इकाई में हम पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले प्रोफाइल पर ही विचार करेंगे।

व्यक्ति–चित्र का अर्थ सिर्फ जीवन परिचय नहीं है। आपने अक्सर पाया होगा कि समय–समय पर घटने वाली घटनाओं के कारण कुछ लोगों की चर्चा विशेष रूप से होने लगती है। जैसे सोवियत संघ के पूर्व राष्ट्रपति गोर्बाचेव ने 'ग्लासनोस्त' और पेरेस्त्रोइका' के माध्यम से सोवियत समाज में आमूल परिवर्तन लाने का अभियान आरंभ किया तो उनकी चर्चा सब जगह होने लगी। जाहिर है, उस समय हर कोई गोर्बाचेव के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने को उत्सुक था। ऐसे समय में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं ने गोर्बाचेव के कई व्यक्ति–चित्र प्रकाशित किये। समाज के विभिन्न क्षेत्रों का कोई न कोई व्यक्ति हर सप्ताह चर्चा में रहता है। राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के दौरान उभरने वाला कोई खिलाड़ी, किसी लेखक की नई पुस्तक के चर्चित होने पर किसी विवादास्पद घटना से जुड़े होने पर, किसी पुरस्कार या किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति की मत्यु के मौके पर भी पत्र–पत्रिकाएँ व्यक्ति–चित्र प्रकाशित करती हैं।

इन व्यक्ति–चित्रों में उस व्यक्ति का जीवन परिचय, उसका कार्य क्षेत्र, उसकी उपलब्धियों और उसके विचारों की संक्षिप्त झांकी प्रस्तुत की जाती है ताकि लोगों को उस व्यक्ति के बारे में आवश्यक जानकारी मिल सके। जाहिर है, व्यक्ति–चित्र बहुत विस्तृत नहीं होता। व्यक्ति–विशेष की समग्र जीवन कथा प्रस्तुत करना इसका उद्देश्य नहीं है। व्यक्ति–चित्र को परिपूर्ण बनाने के लिए उस व्यक्ति का चित्र, उसके कार्य से संबंधित छाया चित्र, दस्तावेज आदि भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। व्यक्ति–चित्र को प्रामाणिक बनाने के लिए संभव हो तो उस व्यक्ति से साक्षात्कार भी लिया जा सकता है। इस प्रकार व्यक्ति–चित्र वस्तुतः व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व की एक रूपरेखा हमारे सामने प्रस्तुत करता है। यह व्यक्ति कोई भी हो सकता है विशिष्ट भी और सामान्य भी। लेकिन उस व्यक्ति–चित्र की प्रासंगिकता अवश्य होनी चाहिए, उसे खबरों में होना चाहिए।

20.3 व्यक्ति–चित्र का उद्देश्य और महत्त्व

व्यक्ति–चित्र आम तौर पर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते हैं। समाचार पत्रों में तरह–तरह के समाचार प्रकाशित होते हैं, नयी–नयी घटनाओं और समस्याओं से लोगों का परिचय होता है। जिन घटनाओं और समस्याओं के प्रति पाठकों की उत्सुकता बढ़ती है, उनके संबंध में वे और अधिक जानना चाहते हैं। उनसे संबधित लोगों के बारे में जानने की उत्कंठा लोगों में बढ़ जाती है। अपने पाठकों की जिज्ञासा

को शांत करने का दायित्व भी पत्र–पत्रिकाओं पर ही है इसलिए वे ऐसे लागों का व्यक्ति–चित्र प्रकाशित करती हैं। प्रसिद्ध टेनिस खिलाड़ी बोरिस बेकर जब पहली बार विंबलडन चैंपियन बने, तब उनकी उम्र महज सत्रह वर्ष की थी। खेल की दुनिया में वह लगभग अपरिचित थे। इतनी बड़ी जीत से उनका नाम सारी दुनिया में फैल गया। स्वाभाविक था कि खेल प्रेमी बेकर के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानने को उत्सुक होते। अब अगर उस समय मीडिया बेकर के बारे में लोगों की जिज्ञासाओं को शांत नहीं करता तो पत्रकारिता के मूल उद्देश्य को ही आघात लगता।

जब कोई राजनेता, कलाकार, लेखक, अभिनेता, खिलाड़ी, विद्वान, अपने कार्यों से समाज को प्रभावित करता है तो स्वाभाविक रूप से उसकी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट होता है। उसके प्रति लोगों की उत्सुकता और आकर्षण बढ़ते हैं और लोग उसके बारे में जानना चाहते हैं। अगर किसी व्यक्ति ने किसी क्षेत्र विशेष में उल्लेखनीय कार्य किया है लेकिन उसका कार्य उसका नाम अभी तक आम लोगों तक नहीं पहुंचा है, तो इस दायित्व को मीडिया पूरा करता है। यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति–चित्र किसी उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति पर ही हो। किसी साधारण या असाधारण संघर्ष या किसी साधारण व्यक्ति की कोई असाधारण बात या किसी भी समुदाय या वर्ग के व्यक्ति के प्रति समाज की उपेक्षा आपको व्यक्ति–चित्र लिखने की ओर प्रेरित कर सकती है। उदाहरण के लिए, सर्कस में जोकर बनकर लोगों को हंसाने वाले व्यक्ति के जीवन के दुख–दर्द आपको उस पर 'व्यक्ति–चित्र' लिखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। मुहल्ले में रेहड़ी पर सब्जी बेचने वाले बूढ़े बाबा के हँसमुख चेहरे में उसके संपूर्ण जीवन का संघर्ष आपको झलकता दिखाई दे तो आप इस व्यक्ति के 'असाधारण' व्यक्तित्व को हजारों, तक पहुँचा सकते हैं। इस तरह के व्यक्ति–चित्र लोगों को अपने समाज की वास्तविकता से परिचय कराते हैं। उन्हें संवेदनशील और मानवीय बनाने की ओर प्रेरित करते हैं। व्यक्ति–चित्र किसी काल्पनिक कहानी से अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।

कोई भी व्यक्ति–चित्र चाहे विशिष्ट व्यक्ति पर आधारित हो, चाहे साधारण जन पर, उसकी प्रासंगिकता आवश्यक है। जैसे, जब किसी व्यक्ति की चर्चा हो रही है, तो उसका व्यक्ति–चित्र प्रकाशित होना प्रासंगिक है। लेकिन अन्य कई अवसर भी विशिष्ट व्यक्तियों के व्यक्ति–चित्र के लिए प्रासंगिक हो सकते हैं। जैसे उनका जन्म दिवस, पुण्य तिथि, पुरस्कार प्राप्ति या अन्य प्रकार की उपलब्धि के अवसर पर भी व्यक्ति–चित्र प्रकाशित हो सकते हैं।

साधारण जन पर लिखे जाने वाले व्यक्ति–चित्र भी प्रासंगिक हों तो अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं। पत्र–पत्रिकाओं में कई बार किसी विषय पर फीचर तैयार कराये जाते हैं। उसके एक अंग के रूप में भी व्यक्ति–चित्र तैयार किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, बुनकरों पर तैयार किया जाने वाला फीचर तब और प्रभावशाली हो सकता है, जब उसके साथ किसी बुनकर का व्यक्ति–चित्र भी दिया जाए या विश्व फुटबॉल कप के अवसर पर आयोजित विशेषांक में पेले, माराडोना या अन्य किसी खिलाड़ी का व्यक्ति–चित्र दिया जा सकता है।

व्यक्ति–चित्र भी सोद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। उल्लेखनीय व्यक्ति के जीवन परिचय को जानने में लोगों की कोई दिलचस्पी नहीं होती, चाहे वह कितना भी अमीर हो या कितने भी बड़े पद पर क्यों न बैठा हो। लेकिन यह व्यक्ति–चित्र लिखने वाले पर निर्भर करता है कि वह उसे कितना सोद्देश्य और प्रभावशाली बना सकता है।

20.4 व्यक्ति के चयन का आधार

व्यक्ति–चित्र के लिए किसी व्यक्ति के चयन के कई आधार हो सकते हैं। मुख्य बात यह है कि वह व्यक्ति आपके रुचि के क्षेत्र से संबंधित हो। जिस व्यक्ति का भी आप चयन करें, उसके बारे में आपको पर्याप्त और यथातथ्य जानकारी हो। अगर ऐसी जानकारी आपको नहीं है तो पहले उसे हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। गलत या भ्रमपूर्ण जानकारी के आधार पर लिखा गया व्यक्ति–चित्र प्रभावशाली नहीं होता। आपके लिखे व्यक्ति–चित्र में दिये गये तथ्यों पर लोग भरोसा करेंगे। अगर उन्हें किसी अन्य स्रोत से मालूम होगा कि आपकी जानकारी सही नहीं है तो आपके लेखन का प्रतिकूल असर पड़ेगा।

व्यक्ति–चित्र के लिए निम्नलिखित आधार पर व्यक्तियों का चयन हो सकता है।

1) उल्लेखनीय घटनाओं के आधार पर

2) उल्लेखनीय उपलब्धियों के आधार पर

3) जन्म दिवस, पुण्य–तिथि या मृत्यु के अवसर पर

4) आम आदमी पर

उल्लेखनीय घटनाओं के आधार पर

व्यक्ति–चित्र लिखने का यह आम आधार है। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में कुछ–न–कुछ ऐसा घटित होता रहता है कि उनसे संबंधित लोगों की विशेष चर्चा होने लगती है। जब भारत में विभिन्न देशों में बड़े–बड़े महोत्सव आयोजित किये और उनकी चर्चा होने लगी, तब इन उत्सवों से जुड़े एक नाम पुपुल जयकर की ओर भी लोगों का ध्यान गया। स्वाभाविक था कि लोग उनके बारे में और ज्यादा जानने को उत्सुक हुए। ऐसा व्यक्ति ''व्यक्ति–चित्र'' का विषय बन सकता है। चिपको आंदोलन के कारण पर्यावरणवादी सुदंरलाल बहुगुणा चर्चित हुए। कभी–कभी असामाजिक कार्यों के कारण भी लोग चर्चित हो जाते हैं और वे "व्यक्ति–चित्र'' के विषय बन जाते हैं। जैसे चार्ल्स शोभराज या जे.के.एल.एफ. से संबद्ध अमानुल्ला खां।

इस तरह के व्यक्ति–चित्र तभी लिखे जाते हैं जब उनसे संबंधित कोई–न–कोई घटना चर्चा के केन्द्र में हो। लोग उसी समय उनके बारे में जानना चाहते हैं। चर्चा समाप्त हो जाने के बाद उनसे संबंद्ध व्यक्तियों में पाठक की दिलचस्पी भी कम हो जाती है। इस तरह के व्यक्ति–चित्र में संबंद्ध घटना का संक्षिप्त उल्लेख भी आवश्यक होता है और यह भी बताना चाहिए कि इस घटना से पूर्व इस व्यक्ति की भूमिका क्या रही है। उस व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय तो आवश्यक है ही।

उदाहरण के लिए अप्रैल–मई (1990) में जब गुजरात और मध्य प्रदेश में सरदार सरोवर और नर्मदा घाटी परियोजना के तहत बनने वाले बड़े बाँध के विरोध में आंदोलन की गूंज सारे देश में सुनाई दे रही थी, उस समय आंदोलन का नेतृत्व करने वाले बाबा आमटे की चर्चा हर कहीं हो रही थी। जनसत्ता के 27 मई, 1990 के अंक में बाबा आमटे का व्यक्ति–चित्र प्रकाशित हुआ। इसके आरंभ में ही बाबा आमटे के इस आंदोलन का परिचय दिया गया था–

''यह करिश्मा मुरलीधर देवीदास आमटे ही कर सकते थे। बीमार होते हुए भी मई की चिलचिलाती धूप में वे नई दिल्ली में गोलमेथी चौक पर धरने पर बैठे। दो हजार

आदिवासियों के साथ उन्होंने दो बाँधों के फेर में विस्थापित होने जा रहे दस लाख लोगों की तकलीफें दिल्ली दरबार को बताई।''

गुजरात और मध्य प्रदेश में सरदार सरोवर और नर्मदा घाटी परियोजना के तहत बनने वाले बाँधों से विस्थापन, वन का विनाश और भारी खर्च से थोड़ा ही लाभ ऐसे अहम मुद्दे थे जिनकी वजह से बाबा आमटे को इस आंदोलन का नेतृत्व संभालना पड़ा। मध्य प्रदेश के हरसूद में मेधा पाटकर और दूसरे लोगों द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन को बाबा आमटे ने एक नई गहराई दी। इसमें अलग–अलग क्षेत्रों के जाने–माने लोगों शिवराम कारंत, सुदंरलाल बहुगुणा, शबाना आजमी आदि की भी हिस्सेदारी रही।

इसी व्यक्ति–चित्र में आगे बाबा आमटे के पूर्व कार्यों का भी परिचय दिया गया है –

*''1950 में महाराष्ट्र के चंदरपुर जिले के वरोरा गाँव के **असर** में उन्होंने आनंदवन खोला था। आनंदवन कोढ़ियों और शरीरिक तौर पर विकलांग लोगों के लिए कर्म का एक आश्रम था।*

पचास एकड़ की पथरीली जमीन पर बने इस आनंदवन में तब सिर्फ छह कोढ़ी थे और पूँजी महज 14 रुपए लगी थी। आज इसका सालाना बजट 80 लाख रुपए से भी ज्यादा का है। यह एक समन्वित संस्था है जो ग्रामीण विकास कार्य, कृषि स्कूल, गूंगे–बहरों का स्कूल, अनाथालय, अस्पताल, बुजुर्गों के लिए आश्रम स्थल, बैंक और लाभ कमाने वाली हथकरघा दुकानें चलाती हैं।''

उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए यह व्यक्ति–चित्र उनके कार्यों के सामाजिक महत्त्व को उजागर करता है।

उल्लेखनीय उपलब्धियों के आधार पर

व्यक्ति–चित्र लिखने का यह दूसरा महत्वपूर्ण आधार है। पुरस्कार प्राप्ति, जीतने, रिकार्ड बनाने, कोई उच्च पद प्राप्त होने, पुस्तक प्रकाशित होने, सम्मानित होने जैसे कुछ कारण हैं जब संबंधित व्यक्ति पर व्यक्ति–चित्र लिखा जा सकता है। ऐसे व्यक्ति–चित्रों में उपलब्धि की चर्चा भी जरूरी है। साथ–साथ उक्त उपलब्धियों से पहले के कार्यों का संक्षिप्त उल्लेख भी करना चाहिए। उस व्यक्ति की उपलब्धि का महत्व क्या है, इसका उल्लेख करने से व्यक्ति–चित्र का महत्व बढ़ जाता है। क्षेत्र विशेष में महत्वपूर्ण कार्य करने वाले लोगों पर लेखक, कलाकार, खिलाड़ी, राजनेता आदि के बारे में व्यक्ति–चित्र प्रकाशित होते हैं। यह हमेशा आवश्यक नहीं कि उस समय चर्चा किसी प्रसंग–विशेष में हो रही हो। लेकिन व्यक्तित्व ऐसा अवश्य होना चाहिए जिसके बारे में लोग पढ़ना और जानना चाहते हों। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, मेजर ध्यानचंद, कुंदनलाल सहगल, लता मंगेशकर, सत्यजित राय, सुनील गवासकर, प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर अमृता शेरगिल आदि कुछ ऐसे व्यक्ति हैं जिनके बारे में हमेशा कुछ न कुछ लोग जानना चाहते हैं। इन पर व्यक्ति–चित्र कभी भी लिखा जा सकता है। लेकिन यह भी आवश्यक है कि कुछ नयापन अवश्य हो। अगर वही पुरानी, घिसी पिटी बातें दुहराई जाएँगी तो व्यक्ति–चित्र प्रभावशाली नहीं होगा।

प्रख्यात पार्श्वगायिका लता मंगेशकर को जब दादा साहब फालके पुरस्कार देने की घोषणा की गयी तो विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं ने लता मंगेशकर के व्यक्तित्व पर नये ढंग से लेख और संस्मरण प्रकाशित किये। लता मंगेशकर पर प्रकाशित ऐसे ही एक व्यक्ति–चित्र के निम्नलिखित अंश में उनके योगदान को रेखांकित किया गया हैं।

''दरअसल लता जी उन कलाकारों में से हैं, जिन्होंने भारतीय संगीत को न सिर्फ लोकप्रियता प्रदान की, वरन् उसके मूल शास्त्रीय तत्व को भी नष्ट नहीं होने दिया। सुर पर पूर्ण नियंत्रण के साथ लता ने फिल्म संगीत को अद्‌भुत लय प्रदान की तथा करोड़ों श्रोताओं की भावनाओं को अपने स्वर की गहराई से छुआ। उनकी गायन शैली गीत की विशेषताओं को भली–भाँति उभारकर पेश करती है।''

(संडे मेल, 6 मई, 1990)

नीचे संक्षेप में उनके जीवन–संर्घष की झांकी भी प्रस्तुत की गई है –

''1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के समय अभिनेता–गायक दीनानाथ मंगेशकर की पुत्री लता कोल्हापुर पहुँची, जहाँ उसे अपने परिवार के भरण पोषण के लिए मराठी फिल्मों में काम करने पर मजबूर होना पड़ा। किशोरी लता को गाने का शौक था, लेकिन उसे अभिनय करने पर मजबूर होना पड़ा....परिवार के गुजारे के लिए वे तीन सौ रुपये माह पर नौकरी करने लगीं और यहीं से लता की फिल्मी यात्रा शुरू हुई।''

(संडे मेल, 6 मई, 1990)

जन्म–दिवस, पुण्य–दिवस या मृत्यु के अवसर पर

किसी विशिष्ट व्यक्ति की जयन्ती और पुण्य तिथि के अवसर पर भी व्यक्ति–चित्र प्रकाशित किये जाते हैं। जब कोई बड़ा लेखक या कलाकार साठ, सत्तर या पिचहत्तर वर्ष पूरा करता है तो अक्सर पत्र–पत्रिकाएँ उस पर व्यक्ति–चित्र प्रकाशित करती हैं। जन्म शताब्दी पर भी व्यक्ति–चित्र प्रकाशित होते हैं। किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु के अवसर पर भी व्यक्ति–चित्र प्रकाशित होते हैं। ऐसे व्यक्ति–चित्रों में उस व्यक्ति के योगदान की चर्चा अवश्य होनी चाहिए। मृत्यु के अवसर पर प्रकाशित व्यक्ति–चित्र ''श्रद्धांजलि'' की तरह हो सकते हैं। परंतु श्रद्धांजलि और व्यक्ति–चित्र में मुख्य अंतर यही है कि व्यक्ति–चित्र में उस व्यक्ति के जीवन परिचय की प्रमुखता रहती है जबकि "श्रद्धांजलि'' में उसके निधन से हुई क्षति और उस पर विभिन्न लोगों की राय भी रहती है।

कभी–कभी ऐसे विस्मृत होते जा रहे व्यक्ति का भी व्यक्ति–चित्र लिखा जा सकता है जिसने किसी समय अपने कार्यों से समाज और देश को प्रभावित किया था। 22 जून, 1990 को शहीद ऊधम सिंह पर **नवभारत टाइम्स** में एक व्यक्ति–चित्र प्रकाशित हुआ। इसका आरंभ निम्नलिखित ढंग से किया गया था –

''12 जून को शहीद ऊधम सिंह के बलिदान के पचास वर्ष पूरे हुए। लेकिन हमारे संचार माध्यमों, सामाजिक संगठनों, बुद्धिजीवियों या सरकार को यह अवसर इतना महत्त्वपूर्ण नहीं लगा कि उस शहीद को याद किया जाए। याद करते भी क्यों? न तो ऊधम सिंह का नाम सत्ता की कुर्सियों से जुड़ा था, न ऊधम सिंह किसी तोपनुमा हस्ती की संतान थे और न आसपास कोई चुनाव होने जा रहा है कि ऊधम सिंह पर आँसू बहाकर वोट बटोरे जाएँ। जबकि 1940 में ऊधम सिंह की शहादत भारत में आजादी की तड़प को तीव्र बना गई थी। उनके बलिदान ने भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को नई ऊचाँई दी थी।''

इस व्यक्ति–चित्र में उनका जीवन परिचय भी दिया गया था –

''26 दिसंबर, 1899 को पटियाला जिले के सुनाम कस्बे में एक रेलवे चौकीदार के घर में ऊधम सिंह जन्मे थे। कच्ची उम्र में ही माँ–बाप का साया सर से उठ गया। जिस भाई के साथ अमृतसर के यतीम–खाने में प्रताड़ित बचपन भोगा, उसकी मृत्यु के बाद ऊधम सिंह का आगे नाथ न पीछे पगहा जैसा हाल हो गया। भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद के समकालीन ऊधम सिंह ने कांग्रेस के कार्यकर्ता के रूप में भी कार्य किया। जलियाँवाला बाग की दुर्घटना उनके जीवन का निर्णायक मोड़ बन गई।

अपने इरादों को अंजाम देने के उद्देश्य से वे अफ्रीका और अमेरिका भी भटके। लेकिन 1923 में उन्हें भगत सिंह के आग्रह पर भारत लौटना पड़ा। अवैध रिवाल्वर रखने के जुर्म में दंडित होकर वे सन् 1928 से 1932 तक मुल्तान और रावलपिंडी की जेलों में रहे। 1932 में जेल से छूटने के बाद ऊधम सिंह गुप्त रूप से लंदन पहुँचे और रोजी–रोटी की तलाश में एक कारखाने में नौकरी की। ऊधम सिंह अपने जिस कार्य के कारण अमर शहीदों की श्रेणी में उल्लेखित किए गए उसको इस "व्यक्ति–चित्र'' में निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया गया है।

13 अप्रैल 1919 को वैशाखी की याद ने उन्हें सदैव बेचैन रखा, जब पशुबल से प्रेरित ब्रिटिश साम्राज्य के संगीनों ने जलियावाला बाग को लाशों से पाट दिया था। इस सभा में ऊधम सिंह एक स्वयंसेवक के रूप में शामिल थे और जघन्य कत्लेआम से उनकी आत्मा तड़प उठी। एक शहीद की लाश को घर पहुँचाते हुए उन्होंने अपनी एक मुँहबोली बहन (अत्तरा कौर) के सामने अंग्रेजों से बदला लेने का प्रण लिया। समय, जो बड़े–बड़े घाव भर देता है, ऊधम सिंह के प्रतिशोध की आग को मंद न कर पाया। इस नरसंहार के कर्ताधर्ता जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गवर्नर माइकल ओडायर की मौत ऊधम सिंह के जीवन का मकसद बन गई। इक्कीस वर्षों बाद इंग्लैंड जाकर ऊधम सिंह ने राष्ट्रीय अपमान का बदला लेकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

13 मार्च, 1940 को लंदन के कैक्सटन हॉल में ईस्ट इंडिया ऐसोसिएशन और रॉयल सैंट्रल एशियन सोसाइटी द्वारा आयोजित एक समारोह में भूतपूर्व गवर्नर माइकल ओडायर को उनकी सत्सेवाओं के लिए बीस हजार पौंड की राशि देकर सम्मानित किया जाना था। भारत मंत्री लार्ड जिटलैंड भी उपस्थित थे। ज्योंही सभा समाप्त होने को थी, ऊधम सिंह के रिवॉल्वर से निकली गोलियों ने 21 वर्ष पुराना अपना हिसाब चुका लिया। माइकल ओडायर वहीं ढेर हो गये और लार्ड जिटलैंड घायल हो गए।''

यह व्यक्ति–चित्र ऊधम सिंह को फाँसी दिये जाने (12 जून, 1940) के पचास वर्ष पूरे होने पर प्रकाशित हुआ था।

आम आदमी के आधार पर

मामूली से मामूली आदमी के जीवन में भी कुछ न कुछ अपूर्व और उल्लेखनीय अवश्य होता है। जिसे अगर उजागर किया जाये तो वह लोगों के लिए प्रेरणास्पद, ज्ञानवर्धक और रोचक हो सकता है। कई बार पत्र–पत्रिकाओं में साधारण लोगों के जीवन के भी प्रभावशाली व्यक्ति–चित्र प्रकाशित होते हैं।

*''26 मई 1990 के **नवभारत टाइम्स** में लक्ष्मण राव नाम के एक व्यक्ति का व्यक्ति–चित्र प्रकाशित हुआ। यह व्यक्ति दिल्ली के राउज एवेन्यू के पास पान–सिगरेट की दुकान करता है। कुछ साल पहले घर से भागकर नये जीवन की तलाश करने वाले इस व्यक्ति के मन में लेखक बनने की तमन्ना है और हर तरह का संघर्ष उठाते*

हुए उसने अपनी इस आकांक्षा को पूरा भी किया है। उसकी पुस्तकें प्रकाशित भी हुई हैं।

इस तरह के व्यक्तियों पर लिखते हुए मुख्य पहलू है उनका जीवन संघर्ष, उनका साहस और लगन और जीवन के संवेदनशील और करूण पक्ष। अगर हम इस व्यक्ति–चित्र का जायजा लें तो हमें ये सभी विशेषताएँ मिल सकती हैं। लेखक ने सबसे पहले उसके जीवन के अंतर्विरोध को व्यक्त किया है –

''वह घटना उसने बचपन में सुनी थी और तभी से रात–दिन यही सोचता रहता था कि रामदास कैसे मरा? आखिर जीवन क्या है? क्या इंसान को समाज के लिए कुछ किए बगैर मर जाने का अधिकार है? इन सवालों ने छोटी सी उम्र में ही उसके दिमाग में बावलापन पैदा कर दिया। लिखने की एक ललक, एक लालसा जागृत कर दी। उसकी ये ललक, ये बावलापन पूरा हो गया है क्योंकि आज वह एक लेखक है, एक प्रकाशक है और अपनी पुस्तकों का विक्रेता भी स्वयं ही है। परंतु विडम्बना तो यह है कि लोग उसे पान वाले के रूप में ज्यादा और लेखक के रूप में कम जानते हैं।

रामदास की मौत उसके जीवन को एक राह तो दिखा गई, लेकिन इसके लिए उसे जीवन के कठिनतम रास्तों से गुजरना पड़ा। पत्थर ढोने पड़े, मजदूर बनना पड़ा, ढाबे पर बर्तन मांजने पड़े, सड़क पर सोना पड़ा, यहाँ तक कि अपने पिता से झूठ बोलकर घर से भागने को मजबूर होना पड़ा।

फिर उसे लिखने की प्रेरणा कैसे मिली, यह बताया गया है :

उसका नाम लक्ष्मण राव है। राउज एवेन्यू में कई सरकारी दफ्तर हैं। उन्हीं दफ्तरों के पास एक पेड़ के नीचे लक्ष्मण का पान–सिगरेट का एक छोटा सा खोखा है। जहाँ पर बैठकर वह पान–सिगरेट बेचता है और खाली समय में कुछ–न–कुछ पढ़ता रहता है।

लक्ष्मण राव महाराष्ट्र में अमरावती जिले के एक छोटे–से गाँव (तड़ेगाँव, दशासर) का रहने वाला है। उसी गाँव में रामदास नाम का एक लड़का भी रहता था। एक बार छुट्टियों में रामदास अपने मामा के गाँव गया। कुछ दिनों बाद जब वह वापिस घर आ रहा था तो रास्ते में पड़ती एक स्वच्छ जल से भरी नदी में उसका नहाने का मन हुआ। अपनी इच्छा को पूरी करने के लिए रामदास कपड़े उतार नदी में कूद गया, लेकिन उसमें से वह जिन्दा बाहर नहीं निकल पाया। गाँव वाले उसकी लाश को निकाल कर बाहर लाए। बचपन में सुनी साधारण सी लगने वाली इस घटना ने लक्ष्मण के अंदर एक लेखक पैदा कर दिया। सातवीं कक्षा में पहुँचते–पहुँचते लक्ष्मण ने लघुकथाएँ लिखनी शुरू कर दी थी। आज उसकी दो पुस्तकें 'नई दुनिया' नई कहानी' (सामाजिक उपन्यास) और 'प्रधानमन्त्री' (नाटक) प्रकाशित हो चुके हैं। कुल मिलाकर अब तक वह ग्यारह उपन्यास लिख चुका है। 'रामदास उसका पहला उपन्यास था।''

बाद में लेखक ने विस्तार से लक्ष्मण राव के जीवन का परिचय दिया है। इस तरह के व्यक्तित्व, उनकी जीवन शैली और उनकी अभिरुचियाँ, उनके संघर्ष और सफलताएँ–असफलताएँ हमें बहुत कुछ सिखाती और बताती हैं। हमेशा महान् व्यक्ति ही हमारे शिक्षक नहीं होते। साधारण लोग भी हमें बहुत कुछ सिखा सकते हैं।

बोध प्रश्न –1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :

1) प्रोफाइल शब्द से क्या अभिप्राय है? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) व्यक्ति–चित्र क्यों प्रकाशित किए जाते हैं? लगभग पाँच पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) क्या आम आदमी पर भी व्यक्ति–चित्र लिखा जा सकता है? अगर 'हाँ' तो कारण स्पष्ट कीजिए। उत्तर लगभग तीन पंक्तियों में हो।

.....

.....

.....

.....

4) व्यक्ति–चित्र लिखने के लिए व्यक्तियों का चयन किन आधारों पर किया जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

20.5 लेखन की तैयारी

व्यक्ति–चित्र के लिए लेखक को पहले पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए। अगर आप पत्रकारिता के पेशे में हैं तो आप को तरह–तरह के क्षेत्रों के लोगों पर व्यक्ति–चित्र लिखने पड़ सकते हैं, और संभव है कि इसकी तैयारी के लिए आपको आवश्यक समय भी न मिले। इसलिए जरूरी है कि आप अपना सामान्य ज्ञान विस्तृत बनाएँ, नये से नये क्षेत्रों और विषयों के बारे में आप अध्ययन बढ़ायें, उन पर प्रकाशित सामग्री की जानकारी रखें और उनका संग्रह करें या उन पर नोट लेते रहें ताकि समय पर उनका उपयोग कर सकें।

20.5.1 आवश्यक अध्ययन

व्यक्ति–चित्र के लिए अध्ययन आवश्यक है। कई बार आपको ऐसे व्यक्ति पर लिखना पड़ सकता है, जिसके बारे में आपको लाइब्रेरी में जाकर पुस्तकों की छानबीन करनी पड़े। हो सकता है, आपको उस व्यक्ति के बारे में सामान्य जानकारी तो हो, लेकिन

अगर पर्याप्त अध्ययन के बाद व्यक्ति–चित्र लिखेंगे तो आप कुछ नयी और महत्त्वपूर्ण जानकारी पाठकों को दे सकेंगे।

व्यक्ति–चित्र में तथ्यों और आँकड़ों का सही होना आवश्यक है। इसलिए आप अपने लेख में जो भी तथ्य और आँकड़े दें, सुनिश्चित कर लें कि वे सही हैं। तारीखों, नामों, और अन्य तथ्यों का भी सावधानी से इस्तेमाल करें। इसके लिए जरूरी है कि आप प्रमाणिक पुस्तकों और स्रोतों से ही तथ्य लें। सही तथ्य नहीं दिए जाने से भ्रम उत्पन्न हो सकते हैं। उदाहरण के लिए बंगला कवि और फिल्म अभिनेता हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय की मृत्यु (23 जून, 1990) के अवसर पर प्रकाशित एक व्यक्ति–चित्र में लिखा गया था कि वे पहली लोकसभा में गुंटुर (आंध्र प्रदेश) से चुने गए थे जबकि सत्यता यह है कि वे गुंटुर से नहीं, विजयवाड़ा से चुने गए थे।

लगातार 481 घंटे तक डिस्को करके गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराने वाले युवक राममूर्ति पट्टाभिरमन पर **नवभारत टाइम्स** में प्रकाशित व्यक्ति–चित्र में निम्नलिखित आँकड़े भी दिये गये थे:

''रमन को लगभग 20 हजार दर्शकों ने तालियाँ बजा बजाकर प्रोत्साहित किया। 8,600 आगंतुकों ने रजिस्टर में अपनी टिप्पणियाँ लिखीं। लगभग 150 कैसटों ने 600 वॉट के स्पीकरों पर माइकल जैकसन, मेडोना आदि के गीत और अन्य धुनें बिखेरीं। रमन ने हर पाँच घंटे के बाद 25 मिनट तक थकान मिटाई। नियमानुसार वे प्रत्येक घंटे के बाद पाँच मिनट का विश्राम कर सकते हैं या पाँच घंटे बाद इकट्ठा आराम भी किया जा सकता है।''

(न.भा.टा. 1 जुलाई, 1990)

उक्त आंकड़ों के लिए आपको तथ्यों की सही जानकारी होना आवश्यक है। इसके लिए सही स्रोतों से सही जानकारी प्राप्त करनी होती है।

20.5.2 साक्षात्कार

व्यक्ति–चित्र को साक्षात्कार के माध्यम से प्रभावशाली बनाया जा सकता है। अगर व्यक्ति जीवित है और उससे मुलाकात संभव है तो अवश्य मिलना चाहिए। ऐसे साक्षात्कार से जो जानकारी प्राप्त होगी, उससे व्यक्ति–चित्र अधिक सार्थक और सोद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है। लक्ष्मण राव नामक जिस व्यक्ति के व्यक्ति–चित्र का उदाहरण पीछे दिया गया है, उस में स्वयं लक्ष्मण राव के कथन उद्धृत किए गये हैं।

''इस घिसटती जिंदगी को जीते–जीते मुझे यह अहसास हो गया कि इस तरह मेरा लेखक बनने का सपना कभी पूरा नहीं हो सकता। सो लेखक बनने की बात अधूरी रह गई। एक दिन कुछ शुभचिंतकों की राय और सहायता से मैंने राउज एवेन्यू में एक पेड़ के नीचे मिट्टी और ईंट का एक छोटा सा चबूतरा बनाया और पान–सिगरेट बेचने लगा।.....''

साक्षात्कार संभव न होने पर जिस व्यक्ति पर व्यक्ति–चित्र लिख रहे हैं उसके उपलब्ध न होने पर अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों से भी उसके बारे में साक्षात्कार लिये जा सकते हैं या उस व्यक्ति विशेष के संबंध में अन्य व्यक्तियों के कथन का इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, हॉलीवुड की प्रख्यात अभिनेत्री ग्रेटा गार्बो का 15 अप्रैल,

1990 को 85 वर्ष की उम्र में देहांत हो गया। **नवभारत टाइम्स** में उस समय लिखे गये एक व्यक्ति–चित्र में गार्बो के बारे में कई लोगों के कथन उद्धृत किए गये थे जो गार्बो के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को उजागर करते थे।

पूर्व उद्धृत लता मंगेशकर के व्यक्ति–चित्र में फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार का निम्नलिखित कथन भी उद्धृत किया गया था जो लता मंगेशकर को दादा साहब फाल्के पुरस्कार मिलने पर कहे गये थे –

''लता जी का व्यक्तित्व सादगी व विविधता का प्रतिरूप है। उन्होंने भारतीय संगीत को ऐतिहासिक गरिमा प्रदान की है। उन्हें पुरस्कृत कर उनके प्रति दरअसल कृतज्ञता और श्रद्धा व्यक्त की गई है।''

20.5.3 सामग्री का चयन

व्यक्ति–चित्र के साथ प्रायः व्यक्ति का चित्र दिया जाता है। लेकिन इस तरह के चित्र भी दे सकते हैं। जैसे लक्ष्मण राव वाले व्यक्ति–चित्र के साथ दी गई फोटो में लक्ष्मण राव को अपनी छोटी सी टिन की दुकान में पान बेचते दिखाया गया है। ग्रेटा गार्बो वाले व्यक्ति–चित्र के साथ उसके कुछ भावपूर्ण चित्र दिये गये हैं। विश्व बुक का रिकार्ड बनाने वाले युवक रमन की नृत्य मुद्रा में तस्वीर दी गई है। कलाकारों पर लिखे गये व्यक्ति–चित्रों के साथ प्रायः उनकी कलाकृतियों या शिल्पों की तस्वीरें अवश्य दी जानी चाहिए। ऐसे चित्रों से व्यक्ति–चित्र प्रभावशाली हो जाते हैं। बड़े समाचार पत्र प्रायः विशिष्ट व्यक्तियों से संबंधित तस्वीरों का कैटलॉग या कंप्यूटर फाइल रखते हैं। ऐसी सामग्री की खोजबीन करके व्यक्ति–चित्र के साथ दी जानी चाहिए। व्यक्ति–चित्र के साथ कोष्ठक में उस व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण कथन या अन्य किसी व्यक्ति का कथन उद्धृत किया जा सकता है।

20.6 व्यक्ति–चित्र के विभिन्न पक्ष

व्यक्ति–चित्र का लेखन कैसे किया जाए, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि आप व्यक्ति–चित्र किस पर और किसके लिए तैयार कर रहे हैं। व्यक्ति–चित्र लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं है। इसका अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि व्यक्ति–चित्र में किन–किन बातों का उल्लेख आवश्यक है। व्यक्ति–चित्र चाहे जिस पर लिखा जाए, निम्नलिखित बातों का अवश्य उल्लेख हो –

1) जीवन परिचय

2) कार्य–क्षेत्र

3) उपलब्धि और योगदान

4) प्रासंगिकता और महत्त्व

20.6.1 जीवन परिचय

व्यक्ति–चित्र में व्यक्ति का संक्षिप्त जीवन परिचय अवश्य दिया जाना चाहिए। अगर व्यक्ति अपरिचित है तो जीवन परिचय कुछ विस्तार से भी दिया जा सकता है। लेकिन व्यक्ति–चित्र का आकार ही जीवन परिचय के विस्तार को तय करेगा। अगर

व्यक्ति–चित्र 400–500 शब्दों में ही प्रस्तुत किया जाना है तो जीवन परिचय भी 100–125 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

जीवन परिचय के अंतर्गत पूरा नाम, जन्म तिथि, आयु, जन्म स्थान, शिक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि, बाह्य व्यक्तित्व, स्वभावगत विशेषता आदि का उल्लेख किया जाता है। इनमें से जो तथ्य उपलब्ध न हों, उन्हें छोड़ा जा सकता है, परंतु कोशिश करनी चाहिए कि जीवन के संबंध में सभी मुख्य सूचनाएँ व्यक्ति–चित्र में दी जा सके। ग्रेटा गार्बो के व्यक्ति–चित्र में उसका जीवन परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया गया है :

''स्टॉकहोम (स्वीडन) में 1905 में जन्मी गार्बो का पूरा नाम था–ग्रेटा लोविसा गुस्ताफसनथा। एक मजदूर की बेटी ग्रेटा के बचपन की स्मृतियाँ सुखद नहीं थीं। गार्बो ने कभी विवाह नहीं किया। 'मैं अकेलापन चाहती हूँ' गार्बो ने ग्रैंड होटल फिल्म में यह संवाद बोला था। 1941 के पचास सालों बाद तक गार्बो ने अकेला जीवन ही जिया।'

उपर्युक्त विवरण में गार्बो की जन्म तिथि, जन्म स्थान, पूरा नाम और पारिवारिक पृष्ठभूमि का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। अगर आपने ध्यान दिया हो तो आप पाएंगे कि पारिवारिक भूमि को इस रूप में प्रस्तुत किया गया है जिससे गार्बो के व्यक्तित्व की विशिष्टता को समझा जा सके।

बाबा आमटे के व्यक्ति परिचय में भी उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि का उल्लेख इसी ढंग से किया गया है –

''सीधे–सरल और मेहनती बाबा आमटे, वर्धा जिले के हिंगाघाट के ब्राह्मण जागीरदारों के परिवार में जन्मे थे। उन्होंने वकालत पास की और वरौरा में वकील का पेशा अपना लिया। एक बार अपनी जमीन–जायदाद का जायजा लेने गाँव गये। वहाँ उन्होंने किसानों की गरीबी देखी, जुलाहों, मेहतरों, भंगियों को मेहनत करते और बदहाल जिदंगी जीते देखा। उन्हें लगा कि इस जिदंगी को सुधारने के लिए कुछ किया जाए। उन्होंने गोबर को उठाया और पाथना शुरू किया। एक बार उन्होंने एक कोढ़ी को नाली में कराहता देखा। पहले वे उसे छोड़कर आगे बढ़ गये, फिर लौटे। उन्होंने उसे उठाया और डॉक्टरों के सहयोग से उसकी देखभाल की।''

जीवन के जिस पहलू का संबंध उस व्यक्ति के कार्य–क्षेत्र से हो, उसका उल्लेख अवश्य किया जाना चाहिए ताकि उसके कार्य के महत्त्व को सही संदर्भ में समझा जा सके।

20.6.2 कार्य–क्षेत्र

व्यक्ति–चित्र का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष है कार्य–क्षेत्र। कार्य–क्षेत्र दो तरह के हो सकते हैं। एक जीविकोपार्जन के लिए किया जाने वाला कार्य। दूसरा, अभिरुचि का वह क्षेत्र जिसके कारण व्यक्ति को ख्याति प्राप्त हुई है। जैसे एक साहित्यकार पेशे से वकील, अध्यापक या दुकानदार भी हो सकता है। खिलाड़ी किसी बैंक में अधिकारी हो सकता है। पूर्व उद्धृत पट्टाभिरमन के व्यक्ति–चित्र में बताया गया है कि वह पेशे से इंजीनियर है और एअर फोर्स में नौकरी करता है। लक्ष्मण राव पान की दुकान चलाता है और उपन्यास और नाटक भी लिखता है।

व्यक्ति–चित्र लिखते हुए कार्य के इन दोनों क्षेत्रों का उल्लेख किया जाना चाहिए। लेकिन मुख्य चर्चा उस क्षेत्र की होनी चाहिए जिसके कारण वह व्यक्ति 'उल्लेखनीय' बन सका है। बाबा आमटे पेशे से वकील थे, लेकिन यह बात कितनों को मालूम है? आज उनकी ख्याति उनके सामाजिक कार्यों के कारण है। बाबा आमटे के गाँव की जिस घटना का उल्लेख ऊपर किया गया है उसने उनके जीवन की दिशा ही बदल डाली और उन्होंने अपना कर्म–क्षेत्र कोढ़ियों की सेवा को बना लिया। व्यक्ति–चित्र में इसका उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया गया है –

''इस घटना के बाद उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी कोढ़ियों की देख–रेख में लगा दी। उन्होंने कुष्ठधाम खोला और खुद कलकत्ता से ट्रॉपिकल मेडिसिन में एक विशेष कोर्स किया। इसी दौरान आनंदवन, हमालकसा में आदिवासियों के लिए एक परियोजना शुरू की। आनंदवन एक कम्यून की तरह खुला। बाबा सिर्फ कोढ़ियों को ठीक करने में नहीं, बल्कि उन्हें जिंदगी जीने की नई रोशनी देने में भी कामयाब रहे। उन्होंने आदिवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए भी संघर्ष किया।''

कार्य–क्षेत्र के अंतर्गत व्यक्ति की ऐसी अभिरुचियों का भी उल्लेख किया जा सकता है जो उसके बहुआयामी व्यक्तित्व को उजागर करे। बाबा आमटे के व्यक्ति–चित्र में यह भी बताया गया है कि ''बाबा की दिलचस्पी हिंदुस्तानी और पश्चिमी संगीत–साहित्य में भी है। वे खुद कवि हैं। ''पूर्व उद्धृत पट्टाभिरमन पेशे से इंजीनियर, शौक से नर्तक और साथ ही एथलीट भी हैं। इस तरह की सूचनाओं से व्यक्ति–चित्र को प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

20.6.3 उपलब्धि और योगदान

व्यक्ति–चित्र का तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष है– उपलब्धियों और योगदान का उल्लेख। व्यक्ति का जो भी कार्य–क्षेत्र है उसमें उसकी उपलब्धियाँ ही उसे उल्लेख के योग्य बनाती हैं। ये उपलब्धियाँ पुरस्कार और सम्मान के रूप में ही हो यह आवश्यक नहीं है, बल्कि लोकप्रियता, पद और प्रतिष्ठा भी उपलब्धियाँ ही हैं। उपलब्धियाँ वस्तुतः व्यक्ति के योगदान को व्यक्त करती हैं। इसलिए इन सभी का उल्लेख व्यक्ति–चित्र में किया जाना चाहिए। बाबा आमटे ने सामाजिक सेवा (कोढ़ियों की सेवा) का जो महान अभियान चलाया उसके कारण उन्हें लोकप्रियता मिली और पुरस्कृत भी किया गया। इस व्यक्ति–चित्र में बाबा आमटे की उपलब्धियों का उल्लेख भी किया गया है –

''मानवता की खातिर त्याग और मेहनत की तस्वीर पेश करने के लिए बाबा आमटे को 1985 में मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार की राशि को उन्होंने आनंदवन के ही काम में लगा दिया। 1979 में उन्हें जमनालाल बजाज पुरस्कार मिला था। पद्मश्री से वे 1971 में अलंकृत हुए थे। वे राष्ट्रीय एकता परिषद के भी सदस्य रहे हैं।''

व्यक्ति के योगदान के कई रूप होते हैं। एक लेखक अपनी रचना में नये प्रयोग करके साहित्य में योगदान करता है। वह अपने कार्य द्वारा साहित्य को नयी दिशा देता है और सम्मानित भी होता है। ऐसे लेखक पर लिखते हुए उसको प्राप्त पुरस्कारों के साथ–साथ उसके साहित्य के इस पक्ष का उल्लेख अवश्य करना चाहिए। इसी प्रकार किसी खिलाड़ी के खेल की अपनी विशिष्ट शैली का उल्लेख भी करना चाहिए ताकि उसके योगदान और उपलब्धियों को सही परिप्रेक्ष्य में समझा जा सके।

20.6.4 प्रासंगिकता और महत्व

व्यक्ति–चित्र में व्यक्ति के महत्व का उल्लेख अवश्य होना चाहिए। विशेष रूप से तत्कालीन स्थितियों में उस व्यक्ति के महत्व को रेखांकित किया जाना चाहिए क्योंकि व्यक्ति–चित्र की तात्कालिकता का कारण वही होगा। यह महत्व उसके कार्य के मूल्यांकन द्वारा हो सकता है। इसके लिए किसी अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति के कथन को भी उद्धृत कर सकते हैं। लता मंगेशकर पर लिखे गये व्यक्ति–चित्र में उनके महत्व को लेखक ने निम्नलिखित शब्दों में प्रस्तुत किया है –

''दरअसल लता जी कुछ उन कलाकारों में से हैं जिन्होंने भारतीय संगीत को न सिर्फ लोकप्रियता प्रदान की, वरन उसमें मूल शास्त्रीय तत्व को भी नष्ट नहीं होने दिया। सुर पर पूर्ण नियंत्रण के साथ लता ने फिल्मी संगीत को अद्‌भुत लय प्रदान की तथा करोड़ों श्रोताओं की भावनाओं को अपने स्वर की गहराई से छुआ। उनकी गायन शैली गीत की विशेषताओं को भली भाँति उभार कर पेश करती है।''

(संडे मेल, 6 मई, 1990)

इसी में उनके गायन की प्रासंगिकता को भी रेखांकित किया गया है –

''अपने चालीस वर्ष के लंबे कैरियर में उनसे टक्कर लेने वाली कोई गायिका सामने नहीं आयी। आज जब वे अपनी प्रतिभा के चरम बिन्दु पर पहुंच चुकी हैं और अनेक पार्श्वगायिकाएँ उनके आशीर्वाद से इस क्षेत्र में आगे बढ़ने लगी हैं, फिर भी हिन्दी फिल्में, पार्श्व संगीत और पार्श्व संगीतज्ञ लता मंगेशकर के बिना अधूरा है।''

उपर्युक्त व्यक्ति–चित्र में फिल्म निर्देशक गुलजार और अभिनेता दिलीप कुमार के कथन भी उद्धृत किये गये हैं जिनमें लता मंगेशकर की गायन शैली के महत्व को उजागर किया गया है।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त व्यक्ति–चित्र में व्यक्ति के विचार और दृष्टिकोण को भी प्रस्तुत करना चाहिए। इससे उसके सोच की दिशा और उसकी वैचारिक क्षमता को भी पहचाना जा सकता है।

बोध प्रश्न–2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें ।

1) व्यक्ति–चित्र के लेखन के लिए अध्ययन की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

2) व्यक्ति–चित्र में व्यक्ति के किन–किन पक्षों को प्रस्तुत करना चाहिए?

.....

.....

.....

3) कार्यक्षेत्र के अंतर्गत किन–किन बातों का उल्लेख किया जाना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

20.7 व्यक्ति–चित्र का लेखन

व्यक्ति–चित्र के जिन विभिन्न पक्षों की चर्चा की गयी है, उन्हीं से मिलकर व्यक्ति–चित्र का निर्माण होता है। प्रश्न यह है कि इन पक्षों को किस क्रम में रखा जाए और प्रत्येक पक्ष को कितना स्थान दिया जाए। इन बातों को तय करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि "व्यक्ति–चित्र'' के लिए पत्र–पत्रिकाओं में कितना स्थान निर्धारित है और आपका पाठक वर्ग कौन–सा है।

20.7.1 व्यक्ति–चित्र का आकार

अगर व्यक्ति–चित्र निबंध के आकार में लिखा जाना है अर्थात् 400–600 शब्दों से लेकर लगभग 2000 शब्दों तक तो निश्चय ही उपर्युक्त सभी पक्षों को विस्तार दिया जा सकता है। लेकिन कई बार व्यक्ति–चित्र 100–300 शब्दों तक में भी लिखा जाता है, वहाँ व्यक्ति–चित्र के आवश्यक सभी पक्षों को समेटना संभव नहीं है। वहाँ अत्यंत संक्षेप में बहुत कम सूचनाओं के साथ व्यक्ति–चित्र लिखना होता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित व्यक्ति–चित्र को देखिए –

''दुबले–पतले और मृदुभाषी लक्ष्मीचंद जैन सरकार की आर्थिक नीतियों पर चर्चा छिड़ने पर जहर उगलने लगते हैं तो एकबारगी अचंभित हो जाना पड़ता है। लेकिन जनसेवा के लिए 1989 को रेमन मेगसेसे पुरस्कार पाने वाले इस 64 वर्षीय अर्थशास्त्री और सामाजिक कार्यकर्ता की आस्था गांधी की अवधारणा के अनुरूप आत्मनिर्भर गाँव बनाने की है। वे करघा उद्योग के लिए भी मदद चाहते हैं, "योजना आयोग लाखों करघा मजदूरों के फायदे के लिए कुछ करता तो यही मेरे लिए पुरस्कार होता।''

यह लगभग 80 शब्दों में लिखा गया व्यक्ति–चित्र है जो 31 अगस्त, 1989 के हिंदी **'इंडिया टुडे'** के स्तंभ **'चर्चित चेहरे'** में प्रकाशित हुआ था। लेखक ने इतने कम शब्दों में व्यक्ति–चित्र के लिए आवश्यक प्रायः सभी महत्वपूर्ण सूचनाएँ देने की कोशिश की है।

जीवन परिचयः लक्ष्मीचंद जैन (नाम), 64 वर्षीय (आयु), दुबले–पतले मृदुभाषी (बाह्य व्यक्तित्व और स्वभाव), गांधीवादी (दृष्टिकोण)

कार्य–क्षेत्र : अर्थशास्त्री और सामाजिक कार्यकर्ता

उपलब्धि एवं योगदान : 1989 में रेमन मेगसेसे पुरस्कार से सम्मानित, आत्मनिर्भर गाँव बनाने के लिए जनसेवा।

प्रासंगिकता और महत्व : सरकार की आर्थिक नीतियों की आलोचना और वैकल्पिक अवधारणा पेश करना।

उपर्युक्त सूचनाओं को अत्यंत संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है। इस संक्षिप्त व्यक्ति–चित्र की विशेषता यही है कि इसे परिपूर्ण व्यक्ति–चित्र बनाने की कोशिश की गयी है। यहाँ तक कि व्यक्ति–चित्र को और अधिक प्रामाणिक और सार्थक बनाने के लिए इसमें लक्ष्मीचंद जैन के एक कथन को उन्हीं के शब्दों में उद्धृत किया गया है। साथ में उनकी फोटो भी दी गयी है।

संक्षिप्त व्यक्ति–चित्र लिखते हुए हमें इन्हीं बातों का ध्यान रखना चाहिए। अत्यंत आवश्यक सूचनाओं को संक्षेप में प्रस्तुत करते हुए हमें व्यक्ति–चित्र तैयार करना चाहिए।

20.7.2 व्यक्ति–चित्र की शैली

अपेक्षाकृत बड़े व्यक्ति–चित्र में शैली का प्रश्न उपस्थित होता है। विभिन्न पक्षों को समेटते हुए व्यक्ति–चित्र कैसे लिखें, इसका कोई निश्चित फॉर्मूला नहीं है। बेहतर यही रहता है कि व्यक्ति–चित्र का आरंभ उस व्यक्ति से जुड़े उस प्रसंग से किया जाए जिसके कारण वह चर्चा का विषय बना है। इससे सुविधा यह रहती है कि आरंभ में ही पाठक को यह स्पष्ट हो जाता है कि उस व्यक्ति की चर्चा किस संदर्भ में की जा रही है। बाबा आमटे पर लिखे गये व्यक्ति–चित्र का आरंभ इसी ढंग से हुआ है जिसे हम यहां ऊपर उद्धृत कर रहें हैं –

''यह करिश्मा मुरलीधर देवीदास आमटे ही कर सकते थे। बीमार होते हुए भी मई की चिलचिलाती धूप में वे नई दिल्ली में गोलमेथी चौक पर धरने पर बैठे। दो हजार आदिवासियों के साथ उन्होंने दो बाँधों के फेर में विस्थापित होने जा रहे दस लाख लोगों की तकलीफें दिल्ली दरबार को बताई।''

गुजरात और मध्य प्रदेश में सरदार सरोवर और नर्मदा परियोजना के तहत बनने वाले बड़े बाँधों से विस्थापन, वन का विनाश और भारी खर्च से थोड़ा ही लाभ ऐसे अहम् मुद्दे थे जिनकी वजह से बाबा आमटे को इस आंदोलन का नेतृत्व संभालना पड़ा। मध्य प्रदेश के हरसूद में मेधा पाटकर और दूसरे लोगों द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन को बाबा आमटे ने नई गहराई दी।

मृत्यु के बाद लिखे गये व्यक्ति–चित्र में मृत्यु का उल्लेख किया जाता है, विशेष रूप से तब जब वह व्यक्ति कम परिचित हो। लेकिन लोकप्रिय व्यक्ति पर लिखे जाते वक्त आरंभ में इसका उल्लेख आवश्यक नहीं है। ऐसे में व्यक्ति–चित्र को उस व्यक्ति के किसी ऐसे पहलू से आरंभ कर सकते हैं जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो। उदाहरण के लिए, गार्बो के जिस व्यक्ति–चित्र का उल्लेख पहले कर आये हैं, उसका आरंभ लेखक विनोद भारद्वाज ने ग्रेटा गार्बो के चेहरे की चर्चा से किया है जिसे वे गार्बो के व्यक्तित्व का सर्वाधिक उल्लेखनीय पहलू मानते हैं –

''ग्रेटा गार्बो के चेहरे पर एक अनोखी चमक थी, एक डर, एक अकेलापन, एक जादू और आशंका का भी एक अद्वितीय आलोक। सिनेमा के इतिहास में शायद किसी अभिनेत्री को इस तरह से याद नहीं किया जाएगा। गार्बो का चेहरा ही जैसे एक संपूर्ण शरीर था। इस चेहरे की न जाने कितनी व्याख्याएँ की जा चुकी हैं।''

कभी व्यक्ति–चित्र का आरंभ उस व्यक्ति के कथन से भी किया जा सकता है –

''इस पुरस्कार के साथ मुझ पर महिलाओं के लिए कुछ सकारात्मक कार्य करने का दायित्व (जिम्मेदारी) आ पड़ा है। इसीलिए मैंने फैसला किया है कि देश में और खासकर देश की राजधानी दिल्ली में बलात्कार, महिलाओं और युवतियों से छेड़छाड़ जैसी घिनौनी हरकतों से बचाने के लिए कदम उठाऊँ। मैं अपनी संस्था 'रक्षक' (जिसकी स्थापना शीघ्र होगी) के जरिए लड़कियों को आत्मरक्षा करना सिखाऊँगी। इस संस्था के लिए समाजसेवी और शहरी नागरिकों से सलाह मशविरा किया जा रहा है। '23 साल की मनीषा वर्मा ने राष्ट्रपति से शौर्यचक्र पाने के बाद अपनी राय जाहिर की।''

(जनसत्ता, 29 अप्रैल 1990)

मनीषा वर्मा पर लिखे इस व्यक्ति–चित्र का आरंभ उसके एक कथन से किया गया है। कहने का अर्थ यही है कि व्यक्ति–चित्र का आरंभ किसी भी तरीके से कर सकते हैं। केवल यह ध्यान रखना जरूरी है कि आरंभ से ही पाठक के सामने स्पष्ट हो कि इस व्यक्ति की चर्चा क्यों की जा रही है।

व्यक्ति–चित्र का शेष कलेवर पूरा करते हुए अन्य पक्षों को सही क्रम में और परस्पर संबद्धता बनाये रखकर लिखिए। हरेक पक्ष जरुरी नहीं कि एक ही स्थान पर उल्लिखित हो। वह जहाँ तक सबसे आवश्यक हो वहीं प्रस्तुत करना चाहिए।

व्यक्ति–चित्र सीधे–सीधे वर्णनात्मक रूप में भी लिखा जा सकता है, परंतु व्यक्ति–चित्र को अधिक प्रभावशाली तभी बनाया जा सकता है जब उसे रचनात्मक रूप दिया जाए। बेहतर हो कि सूचनाओं का उल्लेख और अपनी बात को वर्णनात्मक रूप में रखने की बजाय उन्हें रोचक नवीन और कल्पनाशील ढंग से कहें। बाबा आमटे वाले व्यक्ति–चित्र का उदाहरण लें। बाबा आमटे के कार्यों में उनकी पत्नी का सहयोग भी रहा। इस बात को व्यक्ति–चित्र में निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया गया –

''बाबा आमटे ने जो कुछ किया वह शायद संभव न होता अगर उनके साथ उनकी पत्नी साधना ताई न होती। ताई के नाम से हर किसी की जुबान पर छाई रहने वाली ''ताई'' ने बाबा आमटे को समझा और उनके काम को पूरा सहयोग दिया।''

उपर्युक्त बात निम्नलिखित रूप में लिखने पर मात्र तथ्य का उल्लेख होकर रह जाती :

''बाबा आमटे को अपने कार्यों में पत्नी साधना ताई का भी सहयोग मिला।''

दोनों तरह की प्रस्तुति का अंतर आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं। अपनी शैली को जटिल और आलंकारिक भी न बनाइए। जटिलता से व्यक्ति–चित्र में रोचकता खत्म होगी और आलंकारिकता से लोग आपकी बात के मर्म तक नहीं पहुँच पायेंगें।

अपने व्यक्ति–चित्र को समाप्त भी रोचक ढंग से कीजिए। व्यक्ति के महत्त्व को उजागर करते हुए, उसके योगदान को रेखांकित करते हुए, उस व्यक्ति के संबंध में किसी अन्य के कथन को उद्धृत करते हुए या स्वयं उस व्यक्ति के कथन को उद्धृत करते हुए व्यक्ति–चित्र को समाप्त किया जा सकता है। व्यक्ति–चित्र जहाँ भी खत्म करें, वह अधूरा नहीं लगना चाहिए। उसे नकारात्मक कथन के साथ भी समाप्त नहीं करना चाहिए। व्यक्ति–चित्र को खत्म करते हुए पाठक को यह संतोष मिलना चाहिए कि उस 'व्यक्ति' के संबंध में उसे कुछ "नया" जानने को मिला है 'नया' का अर्थ नयी

सूचनाओं और तथ्यों से ही नहीं है वरन नये दृष्टिकोण और नये ढंग की प्रस्तुति से भी है।

20.7.3 व्यक्ति–चित्र की भाषा

व्यक्ति–चित्र की भाषा समाचार लेखन की भाषा से भिन्न होनी चाहिए। वह न तो तथ्यों का कथन मात्र व्यक्त करने वाली सरल और सपाट होनी चाहिए, न ही निबंध की तरह गूढ़ और जटिल। इसे संस्मरण और रेखाचित्र की तरह सहज, रोचक और रचनात्मक होना चाहिए। व्यक्ति–चित्र लिखते हुए लेखक संस्मरण और रेखाचित्र वाले लेखक की तरह 'गहरे जुड़ा हुआ' तो नहीं हो सकता, परंतु उसे इतना निर्लिप्त भी नहीं होना चाहिए कि वह व्यक्ति को ठीक से समझ ही न सके। व्यक्ति–चित्र का मुख्य उद्देश्य ''व्यक्ति'' को अन्य लोगों से परिचित कराना है। भाषा में कुछ सीमा तक वस्तुपरकता आवश्यक है। लेकिन यह 'परिचय' किस स्तर पर कराया जा रहा है, व्यक्ति–चित्र की भाषा पर निर्भर करेगा। अति विशिष्ट और लोकप्रिय व्यक्ति को सामान्य अर्थों में परिचित नहीं कराया जा सकता। उसके व्यक्तित्व के कुछ नये पहलू उजागर करने होंगे। अगर उन्हें प्रभावशाली ढंग से नहीं रखा जाता है तो व्यक्ति–चित्र की सार्थकता नहीं रहेगी। व्यक्ति–चित्र की भाषा सामान्य बोलचाल के नजदीक होनी चाहिए। नितांत किताबी भाषा निबंध की तरह जटिल हो सकती है। भाषा सहज और प्रवाहमय हो। तथ्यों को भी रोचक और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करे। न भाषा अधिक भावुक और न ही शुष्क हो। वाक्य छोटे और अर्थ स्पष्ट देने वाले हों।

पूर्व में उद्धृत व्यक्ति–चित्रों के अंशों की भाषा का रेयक्टर आप समझ सकते हैं कि व्यक्ति–चित्र के लिए किस तरह की भाषा उपयुक्त है।

20.7.4 व्यक्ति–चित्र का शीर्षक

छोटे व्यक्ति–चित्रों में प्रायः शीर्षक की आवश्यकता नहीं होती, परंतु बड़े व्यक्ति–चित्र में शीर्षक अवश्य दिये जाते हैं। शीर्षक पत्रिका का संपादकीय विभाग भी निर्धारित करता है।

शीर्षक लंबे भी हो सकते है और छोटे भी। परंतु उन्हें सहज और आर्कषक होना चाहिए। शीर्षक में व्यक्ति के नाम का उल्लेख होना अनिवार्य भी नहीं है। कभी उस व्यक्ति के कथन का उपयोग किया जाता है तो कभी व्यक्ति के महत्त्व को उजागर करने वाला शीर्षक दिया जाता है। पूर्व उद्धृत व्यक्ति–चित्रों के शीर्षक नीचे दिये जा रहे है। आप विचार करके देख सकते हैं कि ये शीर्षक व्यक्ति के किसी–न–किसी महत्त्वपूर्ण पक्ष को उजागर करते हैं :

बाबा आमटे : इस समाज में अब भी बाबा आमटे हैं।

मनीषा वर्मा : आत्म–रक्षा दिलाती है सम्मान

ग्रेटा गार्बो : आध्यत्मिक ग्लैमर की रोशनी और अँधेरा

लक्षमण राव : अंततः लक्ष्मण राव का सपना साकार हुआ

लता मंगेशकर : लता मंगेशकर : वे संगीत की ''दादा साहब फालके'' हैं

आप देखेंगे कि कुछ शीर्षकों में नाम का इस्तेमाल किया गया है। लता मंगेशकर और बाबा आमटे वाले शीर्षक उनके महत्त्व को उजागर करते हैं तो मनीषा वर्मा और लक्ष्मण राव के शीर्षक उनके कार्यो की सफलता को। ग्रेटा गार्बो का शीर्षक वैचारिक अधिक है और वह ग्रेटा के व्यक्तित्व के विश्लेषण से उपजी वैचारिक टिप्पणी के रूप में है।

हमेशा सोच–विचार कर और सर्वाधिक उपयुक्त और प्रभावशाली शीर्षक दीजिए।

बोध प्रश्न–3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) संक्षिप्त व्यक्ति–चित्र में क्या विशेषताएँ होनी चाहिए? लगभग पाँच पंक्तियों में उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

2) व्यक्ति–चित्र के आरंभ में किस पक्ष को लेना चाहिए और क्यों?

.....

.....

.....

3) व्यक्ति–चित्र की भाषा की क्या विशेषताएँ होनी चाहिए? लगभग पाँच पंक्तियों में उत्तर लिखिए।

.....

.....

.....

20.8 किसी संस्था के प्रोफाइल का लेखन

जैसा कि प्रस्तावना में कहा गया है, प्रोफाइल का संबंध संस्थाओं से भी होता है। जब कोई संस्था किसी कारण से चर्चा का विषय बनती है तो लोगों का ध्यान बरबस ही उधर चला जाता है। लोग उस संस्था के विषय में अधिक से अधिक जानकारी पाना चाहते हैं। ऐसे में समय और अवसर का सदुपयोग करते हुए पत्र–पत्रिकाएँ उस संस्था का प्रोफाइल प्रकाशित करती हैं और उसमें उससे जुड़ी लगभग सभी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ शामिल होती हैं। उदाहरण के लिए, पिछले दिनों केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाए जाने के प्रसंग में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की खूब चर्चा हुई। वैसे तो वह भारत के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक है, लेकिन पिछले कई वर्षों से उसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिए जाने की माँग चल रही थी। अब यह माँग पूरी हो चुकी है। उसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिल चुका है जो कि उसकी प्रतिष्ठा के बिल्कुल अनुकूल है। उसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाए जाने के बाद जनसत्ता में 23 अक्टूबर 2005 को दामोदर अग्रवाल का एक फीचर 'सुध अपने ऑक्सफोर्ड की' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। इस प्रोफाइल में विश्वविद्यालय के अतीत और वर्तमान

की चर्चा के साथ ही भविष्य की चिन्ता भी प्रकट हुई है। अपने कथ्य, अपनी भाषा और प्रस्तुति में यह एक सुदंर और पठनीय प्रोफाइल है। इसकी शैली भी प्रभावशाली है। इस 'प्रोफाइल' का आरंभ बहुत रोचक ढंग से हुआ है –

''इलाहाबाद विश्वविद्यालय देश के अत्यंत गौरवशाली और भारत में सबसे पहले खोले जाने वाले चार बड़े आधुनिक विश्वविद्यालयों में से एक रहा है। इसकी गोथिक इमारतें हमें अब भी ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की याद दिलाती हैं। इमारत ही नहीं एक समय में इसके पाठ्यक्रम भी ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के मुकाबले के समझे जाते थे। शिक्षकों की ख्याति भी दूर–दूर तक फैली थी और जिन छात्र–छात्राओं में इसमें दाखिला लेकर पढ़ने का जोश था, उन्हें बहुत अच्छा समझा जाता था। जो पढ़ने का अवसर पाते थे वे अपने भाग्य को सराहते थे।

अंग्रेजों के जमाने में भी बड़े से बड़े ओहदे भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय से निकले छात्रों को ही दिए जाते थे। इंडियन सिविल सेवा में भी वे ही सबसे आगे होते थे। राज्य सिविल सेवा तो मानों उन्हीं के खातों में होती थी। कई सालों तक आजादी के बाद भी यही सिलसिला चलता रहा। बाद में जब भारतीय प्रशासनिक सेवाओं की स्थापना हुई तो उसमें भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का ही जौहर चमकता रहा। गोविंद वल्लभ पंत और लालबहादुर शास्त्री जैसे बड़े नेता और प्रशासक भी अपने मंत्रालयों में उन्हीं को रखना अधिक पसंद करते थे। एक दृष्टि से देखें तो 1947 से लेकर 1970 तक केंद्र सरकार का पूरा प्रशासनिक कारोबार जिन बड़े अफसरों के हाथ में था, वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के ही थे।''

इस प्रोफाइल का मध्य विश्वविद्यालय के गरिमापूर्ण अतीत और उस गरिमा को लगे ग्रहण को सामने लाता है –

''शिक्षकों की तब एक गरिमामयी और गौरवशाली परंपरा थी। विभागों के बीच आपस में जो तालमेल था वह देखते ही बनता था। हिन्दी और अंग्रेजी विभाग के बीच जरूर एक जबरदस्त रस्साकशी थी, जिसमें खिलाड़ियों को मजा आता था। हिंदी विभाग में डॉ. धीरेंद्र वर्मा, डॉ रसाल, डॉ. राम कुमार वर्मा आदि उद्भट विद्वान थे। नई पीढ़ी के प्रध्यापकों में डॉ. जगदीश गुप्त और डॉ. धर्मवीर भारती आ गए थे। इनका नाम यहां इसलिए गिनाया जा रहा है कि साहित्य रचना और साहित्य की समालोचना के क्षेत्र में ये विख्यात हो चुके थे।

अंग्रेजी विभाग भी कोई कम नहीं था। उसकी गौरवशाली पठन–पाठन की परंपरा की नींव डाली थी डॉ. अमरनाथ झा ने, जो स्वयं अंग्रेजी के प्राफेसर और हिन्दी, संस्कृत के विद्वान थे। उस समय भी वे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अंग्रेजों को अंग्रेजी पढ़ाने जाते थे। बाद में विभाग के नाम चमकाने वालों में एस.सी देव साहब और डॉ. पी.ई दस्तूर हुए। रघुपति सहाय 'फिराक' (फिराक साहब) और डॉ. हरिवंश राय बच्चन भी अंग्रेजी विभाग में ही थे। प्रगतिशील हिन्दी समालोचना के अग्रणी डॉ. प्रकाशचंद्र गुप्त भी वहीं थे। इसके आलावा डॉ. ईश्वरी प्रसाद, डॉ. रंजन, डॉ. गोरख प्रसाद और डॉ. अमरनाथ अग्रवाल आदि अन्य विभागों के दूसरे सितारे भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए अपनी चमक लगभग पूरे देश में बिखेर रहे थे।

लेकिन तभी एक बौद्धिक अकाल सा आ गया। लोग इलाहाबाद विश्वविद्यालय छोड़कर जाने लगे। माहौल बिगड़ने लगा। दक्षिण से आने वाले विद्यार्थी दक्षिण में ही पढ़ने को

मजबूर होने लगे। जो आते वे मन मारकर आते और बेमन से पढ़ते थे। विश्वविद्यालय को गंदी राजनीति का आखाड़ा बना दिया गया। छात्र–संघ हावी होने लगा।''

प्रसन्नता के माहौल को रेखांकित करने के साथ ही इस प्रोफाइल का अंत कुछ वाजिब चिन्ताओं के साथ हुआ है –

''विश्वास किया जा रहा है कि विश्वविद्यालय के पुराने दिन एक बार फिर लौटेंगे। खर्च का पूरा पैसा सीधे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से आयेगा और उत्तर प्रदेश सरकार पर उसकी निर्भरता समाप्त हो जाएगी। शिक्षकों को केंद्र के समान वेतनमान और भत्ते मिलने लगेंगे, छात्रों को केंद्रीय विश्वविद्यालय की डिग्री मिलेगी। संबद्ध कॉलेजों का स्टेटस बढ़ेगा, वे विश्वविद्यालय के अभिन्न अंग बन जाएंगे। पुस्तकें खरीदी जाने लगेंगी, भवनों का जीर्णोद्धार होगा, प्रयोगशालाएं एक बार फिर सांस लेने लगेंगी। इसलिए माहौल जश्न का है।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना 1887 में हुई थी और बीसवीं शताब्दी के शुरू होते ही देश में शिक्षा का यह एक प्रमुख केंद्र बन चुका था। 1987 में जब इसकी सौवीं जयन्ती मनाई जा रही थी, तब तक यह काफी बिगड़ चुका था। 2005 में अब आशा की एक किरण जागी है इसकी गौरवशाली बहाली की दिशा में। लेकिन इसके केंद्रीय विश्वविद्यालय हो जाने से ही दशकों का कूड़ा साफ नहीं हो जाता। बिगड़े हुए संस्कारों को सुधारना होगा। संबद्ध डिग्री कॉलेजों को प्रतिष्ठा देने का काम विश्वविद्यालय की नई कार्यकारिणी को करना होगा। सबसे बड़ी समस्या होगी उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार के हायर एजुकेशन कमीशन की नियुक्ति–प्रणाली से छुटकारा दिलाना। शिक्षकों को भी अपनी योग्यता बढ़ानी होगी और काम के प्रति समर्पित होना पड़ेगा। सिर्फ ताज पहन लेने से ही ओहदा नहीं बढ़ जाता। इसके लिए काम भी करना होगा।''

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के इस प्रोफाइल का अध्ययन करते हुए आपने यह देखा कि किसी संस्था के प्रोफाइल लेखन में कैसी भाषा और शैली का प्रयोग किया जाता है। आप इस भिन्न भाषा – शैली को भी अपना सकते हैं, लेकिन यह ध्यान रखते हुए कि आप द्वारा लिखित प्रोफाइल को हर वर्ग के लोग पढ़ेंगे। किसी भी दशा में सहजता और सरलता का लोप नहीं चाहिए। किसी संस्था का प्रोफाइल लिखने से पूर्व आप उससे संबंद्ध कुछ लोगों का साक्षात्कार भी ले सकते हैं। यदि आवश्यक लगे तो जनता में कुछ लोगों को चुनकर उनसे भी बातचीत कर सकते हैं। संस्था के इतिहास पर भी अवश्य दृष्टि डालनी चाहिए। उसकी कार्य प्रणाली भी आपके प्रोफाइल में आनी चाहिए।

20.9 सारांश

- फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम की इस इकाई में आपने व्यक्ति–चित्र लेखन के बारे में अध्ययन किया है। व्यक्ति–चित्र फीचर लेखन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। व्यक्ति–चित्र का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का परिचय देना है जो अपने कार्यों द्वारा उल्लेख योग्य हों। व्यक्ति–चित्र का उद्देश्य ऐसा परिचय प्रस्तुत करना है जिसके माध्यम से व्यक्ति विशेष की एक नयी पहचान कायम हो सके। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप व्यक्ति–चित्र के महत्त्व और उद्देश्य पर प्रकाश डाल सकते हैं।

- व्यक्ति–चित्र के लेखन के लिए व्यक्ति विशेष के संबंध में पर्याप्त और सही जानकारी आवश्यक है और इसके लिए अध्ययन, साक्षात्कार आदि जरूरी हो सकते हैं। व्यक्ति–चित्र के साथ प्रकाशन हेतु फोटो–चित्र आदि भी दिये जा सकते हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप व्यक्ति–चित्र के लेखन के चारों पक्षों को समझ सकते हैं और लेखन के दौरान उनका समुचित ढंग से प्रयोग कर सकते हैं।

- व्यक्ति–चित्र के चार प्रमुख पक्ष हैं : जीवन परिचय, कार्य–क्षेत्र, उपलब्धि, योगदान एवं प्रासंगिकता और महत्त्व। व्यक्ति–चित्र लेखन के लिए इन चारों पक्षों को संतुलित ढंग से प्रस्तुत करना होता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप व्यक्ति–चित्र के लेखन के चारों पक्षों को समझ सकते हैं और लेखन के दौरान उनका समुचित ढंग से प्रयोग कर सकते हैं।

- व्यक्ति–चित्र की भाषा समाचार लिखने से किंचित भिन्न परंतु निबंधों की भाषा से अधिक सरल होनी चाहिए। उसमें सहजता के साथ रोचकता भी होनी चाहिए। उसकी शैली विवरणात्मक नहीं होनी चाहिए, न ही लेख की तरह सपाट होनी चाहिए। व्यक्ति–चित्र में व्यक्ति का एक खास रेखाचित्र प्रस्तुत होना चाहिए जो संक्षिप्त तो हो परंतु आर्कषक और ज्ञानवर्द्धक भी हो। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप व्यक्ति–चित्र का आरंभ कर सकते हैं।

अभ्यास

1) पत्र–पत्रिकाओं में से कोई व्यक्ति–चित्र चुनिए और उसको पढ़कर बताइए कि इसे प्रकाशित करने का उद्देश्य क्या था? अपना उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित किन्हीं दो व्यक्ति–चित्रों की परस्पर तुलना कीजिए। एक ही व्यक्ति पर लिखे दो व्यक्ति–चित्रों को तुलना के लिए चुनना बेहतर होगा। उत्तर लगभग दस पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

3) पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री के आधार पर प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर का जीवन परिचय लिखिए। यह जीवन परिचय व्यक्ति–चित्र के एक अंग के रूप में लिखा जाना चाहिए। जीवन परिचय पाँच पंक्तियों से अधिक में न हो।

.....

.....

.....

.....

4) एक क्रिकेट खिलाड़ी के रूप में सुनील गावसकर के योगदान पर पाँच पंक्तियों में प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

5) अपने पड़ोस में रहने वाले किसी ऐसे व्यक्ति से मिलिए जो सामाजिक कार्यों में गहरी रुचि रखते हों। अपनी मुलाकात के आधार पर लगभग 15 पंक्तियों में उनका एक व्यक्ति–चित्र लिखिए।

.....

.....

.....

.....

6) मुंशी प्रेमचंद पर एक व्यक्ति–चित्र लिखिए जिसमें निम्नलिखित पक्ष प्रस्तुत हों :प्रेमचंद का जीवन परिचय

.....

.....

.....

कार्य–क्षेत्र

.....

.....

.....

साहित्यिक योगदान

.....

.....

.....

महत्त्व

.....

.....

.....

यह व्यक्ति–चित्र लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक पक्ष संतुलित हो। इसके लिए आवश्यक सामग्री हेतु आप पुस्तकालयों का प्रयोग करें और व्यक्ति–चित्र के अंत में अपने स्रोत का हवाला दें।

7) उपयुर्क्त व्यक्ति–चित्र को 80–100 शब्दों में संक्षिप्त कीजिए और उनमें उपर्युक्त सभी पक्षों को समेटिए।

.....

.....

.....

8) उपर्युक्त व्यक्ति–चित्र के कम–से–कम दो शीर्षक दीजिए।

.....

.....

.....

20.10 बोध प्रश्नों / अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) प्रोफाइल का अर्थ है पार्श्वचित्र या रेखाचित्र। यह पार्श्वचित्र किसी व्यक्ति का भी हो सकता है और किसी वस्तु का भी। फीचर लेखन के क्षेत्र में प्रोफाइल ऐसे आलेख को कहेंगे जिनमें व्यक्ति–विशेष का संक्षिप्त जीवन–परिचय दिया गया हो या किसी वस्तु–विशेष का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया हो।

2) समाचार पत्रों में तरह–तरह के समाचार प्रकाशित होते हैं, नयी–नयी घटनाओं और समस्याओं से लोगों का परिचय होता है। इनके प्रति पाठकों की उत्सुकता बढ़ती है। वे उनके संबंध में और अधिक जानना चाहते हैं। उनसे संबंधित लोगों के बारे में वे जानना चाहते हैं। अपने पाठकों की इसी जिज्ञासा को शांत करने के लिए समाचार पत्र और पत्रिकाएँ व्यक्ति–चित्र प्रकाशित करती हैं।

3) मामूली–से–मामूली आदमी के जीवन में कुछ न कुछ ऐसा अपूर्व और उल्लेखनीय अवश्य होता है जिसे उजागर किया जाए तो वह लोगों के लिए प्रेरणास्पद, ज्ञानवर्धक और रोचक हो सकता है।

4) i) उल्लेखनीय घटनाओं के आधार पर

ii) उल्लेखनीय उपलब्धियों के आधार पर

iii) जन्म दिवस, पुण्य दिवस या मृत्यु के अवसर पर

iv) आम आदमी के जीवन पर ।

बोध प्रश्न –2

1) व्यक्ति–चित्र के लिए अध्ययन आवश्यक है क्योंकि जिस व्यक्ति पर व्यक्ति–चित्र लिखना है, उसके बारे में पर्याप्त और सही जानकारी होना आवश्यक है। अध्ययन के बाद लिखने पर यह भी संभव है कि उस व्यक्ति के बारे में कोई नयी महत्वपूर्ण जानकारी आप पाठकों को दें।

2) i) जीवन परिचय

ii) कार्य–क्षेत्र

iii) उपलब्धि और योगदान

iv) प्रासंगिकता और महत्व

3) i) जीविकोपार्जन के लिए किया जाने वाला कार्य

ii) अभिरुचि का वह क्षेत्र जिसमें उल्लेखनीय उपलब्धि के कारण वह चर्चा के योग्य बना है।

बोध प्रश्न–3

1) संक्षिप्त व्यक्ति–चित्र 50 से 150 शब्दों के बीच लिखा जा सकता है। इन व्यक्ति–चित्रों में व्यक्ति–चित्र के सभी पक्षों को समेटना संभव नहीं होता। परंतु यह प्रयास अवश्य रहता है कि उल्लेखनीय सभी बातें संक्षेप में आ जाएँ।

2) व्यक्ति–चित्र के आरंभ में उस प्रसंग का उल्लेख होना चाहिए जिसके कारण वह व्यक्ति चर्चा का विषय बना है। इससे लाभ है कि आरंभ में ही पाठक को यह स्पष्ट हो जाता है कि इस व्यक्ति की चर्चा किस संदर्भ में की जा रही है।

3) देखिए उपभाग 20.7.3

अभ्यास

1) और 2) स्वयं कीजिए। अगर आपने इकाई को ध्यान से पढ़ा है तो आप आसानी से बता सकते हैं कि व्यक्ति–चित्र क्यों लिखा गया है और दो व्यक्ति–चित्रों की पारस्परिक तुलना भी कर सकते हैं। तुलना में व्यक्ति–चित्र के उद्देश्य और महत्व पर ध्यान केंद्रित कीजिए।

3) इसमें सचिन तेंदुलकर का जन्म वर्ष, जन्म स्थान, क्रिकेट जीवन का आरंभ, क्रिकेट में खास–खास उपलब्धियाँ, मुख्य उल्लेखनीय घटनाओं का उल्लेख कर सकते हैं।

4) इसमें सुनील गावसकर की बल्लेबाजी और कप्तानी पर प्रकाश डालना चाहिए।

5) आप व्यक्ति के जीवन का संक्षिप्त परिचय दें। उसके सामाजिक कार्यों के क्षेत्र का महत्व बताएँ। उसकी गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण दें। व्यक्तित्व की कोई उल्लेखनीय विशेषता बताएँ और उसका कोई महत्वपूर्ण कथन उद्धृत करें।

6) स्वयं कीजिए

7) स्वयं कीजिए

8) स्वयं कीजिए। इसके लिए अपने आस पास के पुस्तकालय से प्रेमचंद के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

20.11 उपयोगी पुस्तकें

चतुर्वेदी, प्रेमनाथ : **फीचर लेखन**, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली–110001

शुक्ल, विष्णुदत्त :**पत्रकार कला,** सहयोगी प्रकाशन, कानपुर

दीक्षित, प्रवीण :**जनमाध्यम और पत्रकारिता,** सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर

चौहान, कर्ण सिंह (संपादक) : **साक्षात्कार : डॉ रामविलास शर्मा से बातचीत,** राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

जोशी, **मनोहरश्यामः** बातों–बातों में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली